

Vertrauen MBh. 5, 5424. विश्रम्भस्तु न गतव्यो बलवानाम् 3, 14825. य-
दा तपि विश्रम्भमेप्यति KATHĀS. 12, 66. तस्य विश्रम्भास्पदं ययो 7, 81.
एके न मनसो ऽद्वा विश्रम्भमनवस्थानस्य शठकिरात इव संगच्छते Bhāg. P.
5, 6, 2. नीवा विश्रम्भम् KATHĀS. 104, 59. समुत्पन्नविश्रम्भा 1, 21. संज्ञात्
18, 215. द्वादधत्सर्वभूतेषु विश्रम्भं परमं शुभम्। जलचरेषु सर्वेषु शीतरश्मि-
रिव प्रभुः ॥ MBh. 13, 2645. विधायालीकविश्रम्भमज्ञेषु Vertrauen an den
Tag legen Spr. 5303. °संसुप्त Kām. Nīris. 18, 64. (मन्त्राः) अविश्रम्भेषु व-
र्तते विश्रम्भेष्टप्यसंशयम् so v. a. was man nicht mit Vertrauen erwartet
und was man vertrauensvoll erwartet MBh. 12, 9648. भार्यायाः — रतात्त-
विश्रम्भनुपः Vertraulichkeit KATHĀS. 19, 30. (तम्) मन्त्रस्वैरकथाद्येषु वि-
श्रम्भेषु व्यवर्जयत् RĀGĀ-TAR. 8, 2069. विश्रम्भात् vertraulich MBh. 6, 3514.
HARIV. 5269. MĀRĪKĀ. 55, 13. KATHĀS. 31, 1. Bhāg. P. 3, 4, 24. 12, 29. 20,
33. °भृत्य ein vertrauter Diener RĀGĀ-TAR. 8, 2121. विश्रम्भालायाः ver-
trauliche Gespräche Hit. 21, 4. 25, 17. 29, 12. °कथितानि Çāk. 33, 3. स-
विश्रम्भवपस्या vertraut KATHĀS. 45, 248. सविश्रम्भाः कथाः vertraulich
13, 13. — 3) ein scherzhafter Streit (केलिकलह) Trik. H. an. MRD. — 4)
Tödtung (वध) H. an. Viçva im ÇKDr. — Wird auch विश्रम्भ geschrieben,
in den Bomb. Ausgg. aber nur ganz ausnahmsweise.

विश्रम्भण (von श्रम्भ् mit वि simpl. und caus.) n. 1) Vertrauen: गोप-
विश्रम्भणं गतः er gewann das Vertrauen der Hirten Bhāg. P. 10, 24, 35.
— 2) das Gewinnen des Vertrauens: कन्या° Verz. d. Oxf. H. 215, b, 34.
DAÇAK. 189, 16.

विश्रम्भणीय adj. Vertrauen einflößend: भूतानाम् Bhāg. P. 6, 2, 6.

विश्रम्भता f. = विश्रम्भ 1): विश्रम्भतां गम् Vertrauen gewinnen R. 5, 84, 4.

विश्रम्भिन् (von श्रम्भ् mit वि und von विश्रम्भ) adj. P. 3, 2, 143. 1)
vertrauend, Vertrauen setzend in: गुण° Bhāg. P. 6, 5, 20. SĀH. D. 284,
6. श्र° misstrauend BHATT. 7, 11. — 2) Vertrauen genießend MBh. 1,
5845. Spr. 3851. — 3) vertraulich: कदा KATHĀS. 17, 2.

विश्रम्यिन् adj. von श्रि mit वि P. 3, 2, 157.

विश्रवणा (Nebenform von विश्रवस्) m. N. pr. eines Mannes gaṇa
शिवादि zu P. 4, 1, 112. — Vgl. वैश्रवण.

विश्रवस् (2. वि + श्र°) 1) adj. berühmt TBA. 3, 6, 2, 2. ÇAT. Br. 12, 8,
2, 26. KĀTJ. Ça. 19, 5, 3. — 2) m. N. pr. eines Rshi, Sohnes des Pu-
lastja und Vaters des Kubera, Rāvaṇa, Kumbhakarna und Vi-
bhīṣaṇa, MBh. 3, 8358. 15885. 15889. 13, 7638. HARIV. 13858. R. 1,
22, 17 (23, 18 GORR.). 3, 53, 30. 6, 38, 9. 7, 2, 31. fgg. Bhāg. P. 4, 1, 36. 7,
1, 43. 9, 2, 32. 10, 15.

विश्राणन (vom caus. von श्रण् mit वि) n. das Verschenken, Verleihen
AK. 2, 7, 29. H. 387. an. 4, 191. HALĀJ. 2, 264. श्रण्यपयस्विनीनाम् RAGH.
2, 54. वित्त° R. GORR. 2, 32 in der Unterschr. निर्वाण° KĀÇIKH. 7, 84 (nach
AUFRICHT). Nach H. an. auch = परित्याग und संश्लेषण.

विश्राणिक, चित्रविश्राणिक m. Titel des 32ten Sarga im 2ten Buche
des R.; वित्तविश्राणन st. dessen GORR.

विश्राप्ति (von श्रम्भ् mit वि) f. 1) Ruhe, Erholung: शीर्षास्यास्य शरीरस्य
विश्राप्तिमभिराचये R. 2, 2, 6. विश्राप्तिं लभ् Vikr. 20. संसारश्राप्तचित्तानां
तिलो° भूमयः Spr. 3107. सेनाविश्राप्त्यै KATHĀS. 20, 1. 22, 104. 51, 172. 61,
330. °कृत् 100, 14. RĀGĀ-TAR. 8, 1793. SARVADARÇANAS. 96, 10. 14. °तम् Verz.
d. Oxf. H. 238, b, 13. विश्राप्तिं लभतामिदं धनुः Çāk. 39, v. l. — 2) das zu-Ende-

Gehen, Aufhören, Nachlassen, Schluss: विश्राप्तिं वासरो (so ist zu lesen)
ऽप्यगात् KATHĀS. 123, 210. SĀH. D. 98, 7. 267. वाव्य° 291, 7. — 3) N.
pr. eines Tirtha ÇKDr. nach dem VĀRĀHA-P.; vgl. Verz. d. B. H. 144, 16.

विश्राम (wie eben) m. = विश्रम VOP. 26, 170. 1) Ruhe, Erholung
Spr. (II) 1629. MBh. 3, 12902. HARIV. 5991. R. 1, 41, 15. 2, 2, 8. MRGH.
26. यन्मरणं सो ऽस्य विश्रामः Spr. 2646. VARĀH. BṛH. S. 32, 1. KATHĀS.
37, 11. 62, 5. 63, 111. स्वात्म° SĀH. D. 62, 19. 76, 6. PAÑKĀT. 145, 9. Z. d.
d. m. G. 14, 574, 17. KULL. zu M. 3, 101. विश्रामं या Spr. 2403. अविश्रा-
मम् ohne auszuruhen (II) 694. विश्रामं लभतामिदं धनुः Çāk. 39. रोगस्य
विश्रामभूः Ruhestätte Spr. 2641. °वेष्मन् HARIV. 5963. — 2) Ruhestätte.
Ruheplatz HARIV. 5336. Bhāg. P. 3, 23, 21. — 3) das Aufhören, Nachlas-
sen, Ruhe: नैव रात्रिं न दिवसं न मुहूर्तं न च क्षणम्। रामरावणयोर्बुद्धे वि-
श्राममगमत्तदा ॥ R. 6, 92, 35. वाप्य° UTTARAR. 80, 13 (103, 13). श्रवात्प्र-
प्रकरण° H. 255. अविश्रामो ऽयं लोकतत्त्वधिकारः Çāk. 60, 19. अविश्रा-
मदुःख 89, 10, v. l. — 4) Cäsar ÇRUT. 15. 19. 36. — 5) N. pr. eines Man-
nes Ind. St. 1, 60.

विश्राव (von श्रु mit वि) m. P. 3, 3, 25. 1) Getöse: तोय° BHATT. 7, 36.
— 2) Berühmtheit AK. 3, 3, 28.

विश्रि m. 1) Tod UNĀDIR. im SĀMĀKSHIPTAS. nach ÇKDr. — 2) N. pr.
eines Mannes gaṇa गृध्यादि zu P. 4, 1, 136. pl. seine Nachkommen gaṇa
पस्कादि zu 2, 4, 63. — Vgl. वैश्रिय.

विश्रुत 1) adj. s. u. श्रु mit वि. — 2) m. N. pr. eines Mannes VP. 379.
N. 6. DAÇAK. 179. fgg.

विश्रुतदेव m. N. pr. eines Fürsten TĪRAN. 252.

विश्रुतवत् 1) überaus gelehrt, Beiw. Maru's, Vaters des Brhad-
bala, HARIV. 830. — 2) m. N. pr. eines Fürsten, Vaters des Brhad-
bala, VP. 387; vgl. u. 1).

1. विश्रुति (von श्रु mit वि) f. Berühmtheit, Ruhm Bhāg. P. 3, 25, 2.
10, 29, 82. विश्रुतिं गम् berühmt werden MBh. 3, 4561. — Vgl. लोक°.

2. विश्रुति (von श्रु = श्रु mit वि) f. Verzweigung (des Weges oder Was-
serlaufes): विश्रुतयो यथा पथ इन्द्र त्वयति रातयः ÇĀKH. Çn. 9, 6, 6. Unter
mystischen Namen der Kuh so v. a. die nach den Seiten Ausströmende;
voc. °ति VS. 8, 43. °ते PAÑKĀV. Br. 20, 13, 15.

विस्मय (2. वि + स्मय) adj. schlaff: ऐरावतास्फालनविस्मयमङ्गदम् RAGH.
6, 73. विस्मयाङ्गम् adv. Spr. 3042. पतत्प्रकर्षं तत्प्राङ्कः प्रकर्षो यत्र वि-
स्मयः PRATĀPAR. 64, b, 9.

विश्लेष (von श्लिष् mit वि) m. = विपोजन H. an. 3, 742. fg. = श्रयोग
MRD. sh. 45. = श्रपाय P. 1, 4, 24. Schol. = विधुर H. an. MRD. HALĀJ.
5, 38. 1) Auflösung, Lostrennung, das Auseinandergehen: भित्ति° KA-
THĀS. 2, 49. गात्र° Suçr. 1, 37, 4. संध्यस्वि° 50, 2. संधि° 300, 15. 2, 268, 1.
मलमायादिपाशानाम् Verz. d. Oxf. H. 7, a, No. 42. संधौ oder संधि° so
v. a. Hiatus SĀH. D. 575. 221, 13. fg. diese Bed. vielleicht auch Ind. St.
1, 47. — 2) Trennung (von einem geliebten Gegenstande): कात्ता° Spr. (II)
1831. HARB. Anth. 511, Çl. 5. RAGH. 13, 23. Çāk. 51. KATHĀS. 16, 97. 25, 96.
38, 77. 51, 56. fg. 68, 18. 73, 439. 86, 57. Bhāg. P. 1, 15, 1. 5, 8, 22. — 3)
in der Arithm. Differenz GAṆIT. SŪRJAGRAH. 7. GOLĀDHJ. 3, 2. 11, 46. —
Vgl. चित्त°, रात्रिविश्लेषगामिन्.

विश्लेषण (von श्लिष् simpl. und caus. mit वि) 1) adj. auflösend Suçr.